नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रण संवाद : भारत की सुरक्षा का नया घोषणापत्र

महू के आर्मी वार कॉलेज में शुरू हुए 'रण संवाद-2025' ने भारतीय रक्षा चिंतन को नई दिशा दी है. इस दो दिवसीय कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सीडीएस जनरल अनिल चौहान के भाषणों ने स्पष्ट कर दिया कि भारत आने वाले दशकों में केवल परंपरागत रक्षा पर ही नहीं, बल्कि तकनीकी रूप से भविष्य के युद्ध की चुनौतियों के लिए भी तैयार हो रहा है. यह आयोजन न केवल सेनाओं को नई रणनीतिक सोच से जोड़ने का माध्यम है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत अभियान का व्यावहारिक स्वरूप भी सामने लाता है.

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में दो महत्वपूर्ण संदेश दिए. पहला, भारत की रक्षा नीति हमेशा शांति-प्रधान रही है. महाभारत का उदाहरण देते हुए उन्होंने याद दिलाया कि युद्ध से पहले श्रीकृष्ण ने शांति का प्रस्ताव रखा था. लेकिन जब चुनौती दी गई, तो पांडवों ने निर्णायक युद्ध लड़ा. यही भारत की आत्मा है,युद्ध न शुरू करना, लेकिन चुनौती मिलने पर पूरी ताकत से उसका जवाब देना. दूसरा, उन्होंने भविष्य की लड़ाई के नए आयामों पर प्रकाश डाला.भूमि, वायु और जल तक सीमित युद्ध अब अंतरिक्ष और साइबर स्पेस में भी फैल चुके हैं. उपग्रह आधारित प्रणालियां, एंटी-सैटेलाइट हथियार और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर हमारी सुरक्षा का नया आधार बन रहे हैं. रक्षा मंत्री ने सशस्त्र बलों को पांच साल तक चल सकने वाली लंबी लड़ाई के लिए भी तैयार रहने का संदेश दिया.

भारत का रक्षा उत्पादन 1.5 लाख करोड़ रुपये को पार कर चुका है. यह आत्मनिर्भर भारत की बड़ी उपलब्धि है. 'ऑपरेशन सिंदूर' को उन्होंने इसका प्रमाण बताया,जहां स्वदेशी हथियार प्रणालियों ने सफलता दिलाई. आज के युद्ध में केवल ताकतवर टैंक या तेज लड़ाकू विमान ही नहीं, बल्कि एआई संचालित ड्रोन, साइबर क्षमता और क्वांटम तकनीक निर्णायक भूमिका निभाएंगे. यही बात सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने भी रेखांकित की. उन्होंने कहा कि युद्ध में केवल शस्त्र नहीं, बल्कि शास्त्र यानी रणनीति और ज्ञान भी उतना ही आवश्यक है. महाभारत का उदाहरण देकर उन्होंने स्पष्ट किया कि अर्जुन जैसे योद्धा को भी विजय श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन से मिली.

रण संवाद के दौरान मिले संदेशों से स्पष्ट हैं कि तकनीक को अपनाने वाला ही विजेता होगा. सीडीएस चौहान ने कौटिल्य का उल्लेख करते हुए कहा कि युद्ध में शक्ति, उत्साह और युक्ति तीनों का संगम होना चाहिए. इसी दृष्टि से भारत अपनी सेनाओं को संयुक्त प्रशिक्षण, एआई-आधारित हथियारों, साइबर सुरक्षा और इलेक्ट्रॉनिक वार फेयर की दिशा में आगे बढ़ा रहा है. उन्होंने ऋग्वेद का हवाला देकर कहा कि हर दिशा से आने वाले विचारों और सुझावों को आत्मसात करना चाहिए . स्पष्ट है कि भारत केवल वर्तमान चुनौतियों का सामना नहीं कर रहा, बल्कि 10-15 साल आगे की सुरक्षा चुनौतियों का रोड मैप भी बना रहा है.

रण संवाद की एक और विशेषता यह रही कि इसमें न केवल तीनों सेनाओं के 450 से अधिक अधिकारी शामिल हुए, बल्कि ऑस्ट्रेलिया और मिस्र जैसे देशों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया. इससे यह संदेश जाता है कि भारत की सुरक्षा नीति केवल आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं, बल्कि मित्र देशों के साथ साझेदारी और वैश्विक सहयोग पर भी आधारित है. महू का रण संवाद वास्तव में भारत की सुरक्षा नीति का नया घोषणापत्र है. इसमें शांति और शक्ति का संतुलन है, तकनीक और परंपरा का संगम है और आत्मनिर्भरता के साथ वैश्विक सहयोग की दृष्टि भी है. आज जब भू-राजनीतिक परिदृश्य अनिश्चित है, तब भारत का यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है,शांति चाहते हो, तो युद्ध के लिए तैयार रहो.

गणेश चतुर्थी स्वतंत्रता का जन आंदोलन

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू ,शिमला

गणेश चतुर्थी एक ऐसा त्योहार है जो भारत के समृद्ध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक ताने-बाने को समेटे हुए है. यह भक्ति, उत्सव और भगवान गणेश के उन मूल्यों पर चिंतन का समय है जिनका प्रतिनिधित्व वे करते हैं—बुद्धि, समृद्धि और विघ्न-निवारण. सदियों से, गणेश चतुर्थी एक निजी धार्मिक अनुष्ठान से एक सार्वजनिक उत्सव के रूप में विकसित हुआ है जो विभिन्न क्षेत्रों, जातियों और समुदायों के लोगों को एकजुट करता है.

गणेश चतुर्थी की उत्पत्ति प्राचीन काल से मानी जाती है, और धार्मिक ग्रंथों, धर्मग्रंथों और ऐतिहासिक वृत्तांतों में इस त्योहार का उल्लेख मिलता है. सदियों से इस त्योहार में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जो एक निजी, पारिवारिक पूजा से लेकर एक बड़े पैमाने पर सार्वजनिक उत्सव तक विकसित हुआ है. ऋग्वेद जैसे प्राचीन हिंदू ग्रंथों में गणेश पूजा का उल्लेख मिलता है, और स्कंद पुराण और नारद पुराण सहित पुराणों में गणेश चतुर्थी का उल्लेख मिलता है. मध्यकाल में, यह त्यौहार घरों में छोटे पैमाने पर मनाया जाता था, जहाँ परिवार गणेश की छोटी मिट्टी की मूर्तियों की पूजा और अनुष्ठान करते थे.

मध्यकालीन भारत में, गणेश जी शासक राजवंशों और आम जनता, दोनों के द्वारा व्यापक रूप से पूज्य थे. चालुक्य, राष्ट्रकूट और विजयनगर साम्राज्यों ने गणेश पूजा को बढ़ावा दिया. गणेश को समर्पित मंदिरों का निर्माण किया गया और दक्षिण तथा पश्चिमी भारत में इस देवता को अपार लोकप्रियता मिली. महान मराठा शासक छत्रपति शिवाजी ने गणेशोत्सव को राष्ट्रीयता एवं संस्कृति से जोड़कर एक नई शुरुआत की थी. गणेशोत्सव का यह स्वरूप तब से इसी प्रकार कायम रहा और पेशवाओं के समय में भी जारी रहा. पेशवाओं के समय में गणेशजी को लगभग राष्ट्रदेव के रूप में दर्जा प्राप्त था, क्योंकि वे उनके कुलदेव थे. पेशवाओं के बाद 1818 से 1892 तक के काल में यह पर्व हिन्दू घरों के दायरे में ही सिमटकर रह गया.

एक बड़े पैमाने पर सार्वजनिक उत्सव के रूप में, भारतीय स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा 1893 में शुरू किया गया था . तिलक ने गणेश चतुर्थी को एक निजी धार्मिक समारोह से एक सार्वजनिक आयोजन में बदल दिया ताकि जाति-पाति के आधार पर लोगों को एकजुट किया जा सके और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया जा सके.

तिलक ने गणेश चतुर्थी को सामाजिक और राजनीतिक मेलजोल के एक मंच के रूप में देखा. उन्होंने इस त्यौहार के आसपास जनभागीदारी, बड़े जुलूसों और सार्वजनिक आयोजनों को प्रोत्साहित किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयों में एकता और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा मिला. यह सार्वजनिक उत्सव ब्रिटिश नीतियों के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक बन गया, जो बड़े समारोहों और बैठकों को हतोत्साहित करती थीं. भारतीय इतिहास में एक समय आया जब भारतीय जनमानस को अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन के अत्याचारों की त्रासदी से गुजरना पड़ा. यही वो समय था जब लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने लोगों के आत्मविश्वास को जगाने और उनके अंदर ब्रिटिश शासन के खिलाफ खड़े होने के लिए गणेश पूजा को फिर से लोगों के बीच लोकप्रिय बनाया. भारत से ब्रिटिश राज की समाप्ति के लिए उन्होंने सामाजिक आंदोलनों के ज़रिए सामाजिक चेतना का प्रवाह तेज़ करके अंग्रेज़ी राज के ख़िलाफ़ जनमत निर्माण का निर्माण किया.

गणेश महोत्सव को सार्वजनिक रूप देते समय तिलक ने उसे केवल धार्मिक कर्मकांड तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि आजादी की लड़ाई, छूआछूत दूर करने और समाज को संगठित करने और आम जनता को जागरूक करने का उसे जरिया बनाया और उसे एक आंदोलन का स्वरूप दिया. अंत में इस आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया.

हालाँकि, बाल गंगाधर तिलक के इस अभियान से उस दौरान कॉन्ग्रेस सदैव किनारा ही करती रही. 1885 को भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना से ही कॉन्ग्रेस तिलक को निरंतर दरकिनार करती रही क्योंकि तिलक के व्यक्तित्व और उनके प्रति जनता के लगाव को देख अंग्रेज़ों को एहसास था कि अगर तिलक का सामाजिक चेतना का प्रयास मज़बूत हुआ तो, उनकी विदाई का समय और जल्दी आ जाएगा.

ग्वालियर चंबल डायरी

पटवारी ताकत दिखा रहे, बड़े नेताओं को लड़ने से फुर्सत नहीं

हरीश दुबे

विधानसभा चुनाव में अभी तीन बरस से कुछ ज्यादा वक्त है लेकिन चंबल में कांग्रेस अभी से जोर दिखा रही है. आज बुधवार का दिन भिंड और दतिया में कांग्रेस के नाम रहा. जीतू पटवारी ने इन दोनों ही शहरों में वोटचोर गद्दी छोड़ सत्याग्रह का नेतृत्व कर जतला दिया कि पार्टी में सब कुछ ठीक चला तो चुनावी वर्ष तक ऐसी ही सक्रियता बनी रहेगी लेकिन प्रदेश के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों के बीच जिस तरह जुबानी जंग चल रही है और अभी तक अंतर्वीथिकाओं में रहे मतभेद जिस तरह सतह पर आ गए हैं, उसे देखकर लगता है कि आने वाले वक्त में प्रदेश के मुख्य प्रतिपक्षी दल में छत्रपों की गुटबाजी और ज्यादा गहरा सकती है.

आज ग्वालियर संभाग की सीमा में प्रवेश करने के साथ ही पटवारी भले ही जयवर्धन सिंह को अपना भाई बताकर और उनकी वरिष्ठता को स्वीकार कर माहौल को सामान्य बनाने की कोशिश करें लेकिन यह सच है कि प्रदेश की कांग्रेस राजनीति में दिग्विजय के स्वाभाविक उत्तराधिकारी माने जा रहे जयवर्धन को एक जिले की अध्यक्षी संभालने तक सीमित करना न राजा के समर्थकों के गले उतर रहा है और न पार्टी के साधारण कार्यकर्ताओं को. बावजूद इसके, कांग्रेस के नेता आज की रैलियों में उमड़ी भीड़ से उत्साहित हैं. भिंड के दोनों नए जिलाध्यक्षों ने अपने स्वागत जुलूस में भारी भीड़ जोड़कर चंबल के हलकों में पार्टी की नई उम्मीदें जगा दी हैं.

माननीय के इन तेवरों के पीछे कुछ तो बात है...

बात चंबल की ही. भिंड सदर के विधायक किसानों के खाद संकट के मुद्दे पर इस कदर आक्रामक होकर अपनी ही सरकार के प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोल लेंगे और कलेक्टर के बंगले के बाहर ही तंबू गाड़ कर बैठ जाएंगे, इसकी उम्मीद उनके खास नजदीकियों को भी नहीं थी. किसानों से बात करने से इंकार करने वाले कलेक्टर से विधायक महोदय का जिस चंबल शैली में संवाद हुआ, उसकी मिशाल भिंड के इतिहास को खंगालने पर पिछले दस बीस बरस में तो नहीं मिलती. तीस पैंतीस बरस पहले का एक वाकया जरुर ताजा हो गया जब कांग्रेस के एक पुराने नेता खिजर मौहम्मद कुरैशी ने ऐसे ही एक विवाद में तत्कालीन कलेक्टर को चांटा जड़ दिया था. बहरहाल, आज के घटनाक्रम ने यह जरूर साफ कर दिया कि भिंड सदर के विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह अपनी ही पार्टी के राज में प्रशासन के हिटलरी रवैए से नाराज हैं. नरेंद्र कुशवाह कई बार के विधायक हैं, इस बार मंत्री पद पर दावा और वादा था जो पूरा नहीं हुआ.

कितनी महत्वपूर्ण है ग्वालियर कॉन्क्लेव

पांच हजार वर्ष पुराने गोप पर्वत पर ऐतिहासिक किले की शानदार विरासत को समेटे ग्वालियर शहर में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं लेकिन आगरा, दिल्ली, ओरछा और खजुराहो के सर्किट पर होने के बावजूद यहां अपेक्षित तादाद में टूरिस्ट नहीं आ रहे, जाहिर है कि कहीं न कहीं कमियां और खामियां हैं जिन्हें दुरुस्त करना जरूरी है? कुछ ऐसे ही सवालात के जवाब तलाश करने कल शुक्रवार से ग्वालियर में प्रदेश की पहली रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव होने जा रही है.

शिवराज का ग्वालियर आना...

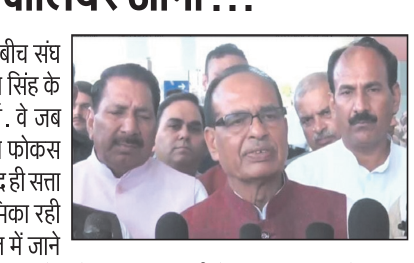

भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने की अटकलों के बीच संघ प्रमुख से लंबी मुलाकात के दूसरे ही रोज शिवराज सिंह के ग्वालियर दौरे से अंचल की राजनीति गरमा गई. वे जब मुख्यमंत्री थे, उस वक्त ग्वालियर पर उनका खास फोकस रहता था. 2018 में सत्ता से उतरने के सवा साल बाद ही सत्ता में वापसी कराने में भी ग्वालियर की ही केंद्रीय भूमिका रही थी. बहरहाल, भोपाल छोड़कर सेंट्रल की राजनीति में जाने के बाद से ही उनके ग्वालियर दौरे कम हो गए हैं. इस बार वे अर्से बाद गालव नगरी में आए, ग्वालियर से दतिया तक खूब भीड़ उमड़ी. एक नेता ने पूछ ही लिया कि क्या हम भावी राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत कर रहे हैं, इस सवाल पर शिवराज हाथ ही जोड़ सकते थे और उन्होंने वही किया...!

गिलगित-बाल्टिस्तान में पुलिस बगावत

पाकिस्तान में कभी भी जनविद्रोह पनप सकता है क्योंकि भारी अभाव, गरीबी, भ्रष्टाचार और सरकार की उपेक्षा के कारण लोग बेहद असंतुष्ट हैं. बलूचिस्तान और पीओके की जनता पाकिस्तान से आजादी के लिए छटपटा रही है.

पाकिस्तान के अवैध कब्जेवाले गिलगित-बाल्टिस्तान प्रांत में हजारों पुलिसकर्मी आंदोलन करने सड़क पर आ गए हैं जिनमें अधिकारी व महिला पुलिस सिपाही भी हैं. उनके असंतोष की वजह यह है कि उन्हें समय पर वेतन-भत्ता जारी नहीं किया जा रहा है. इस क्षेत्र में पहले भी जनता अपने बुनियादी अधिकारों को लेकर बड़े आंदोलन करती रही है. अब यदि सरकार की उपेक्षा के खिलाफ सशस्त्र पुलिस भी भड़क गई तो कानून-व्यवस्था की धज्जियां उड़ जाएंगी. पाकिस्तान अपने 3 प्रांतों में भारी जनअसंतोष से जूझ रहा है. पीओके, बलूचिस्तान के बाद अब गिलगित-बाल्टिस्तान में भी हालात बिगड़ते जा रहे हैं. पाकिस्तान सरकार अपने दमनचक्र से लोगों की आवाज दबाना चाहती है. इन क्षेत्रों के लिए इतना कम फंड जारी किया जाता है, जो वहां की जरूरतों के लिए अपर्याप्त है. जनता की मांग पूरी तरह अनसुनी कर दी जाती है. पाकिस्तान ने सभी क्षेत्रों पर अवैध कब्जा जमा रखा है. जब पाकिस्तान बनने वाला था तब कलात रियासत (वर्तमान बलूचिस्तान) ने उसमें शामिल होने पर असहमति जताई थी, लेकिन उसे जबरन शामिल किया गया. यह पाकिस्तान का सबसे बड़े आकार का प्रांत है. आजादी के 2 माह बाद 26 अक्टूबर 1947 को कश्मीर पर हमला कर पाकिस्तान ने जो हिस्सा हड़प लिया, वह पीओके कहलाता है. गिलगित-बाल्टिस्तान इलाके को पाकिस्तान वन रोड वन बेल्ट योजना के तहत चीन को सौंप देने की कारगुजारी में लगा है. बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना को विद्रोहियों से कड़ी चुनौती मिल रही है. वहां बलूचों का अपहरण व हत्या की लगातार घटनाएं हो रही हैं. पाकिस्तान के कहने पर अमेरिका ने बलूचिस्तान के माजिद ब्रिगेड को आतंकी संगठन घोषित कर दिया लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा. बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) आजादी की लड़ाई लड़ रही है. यूएन ने भी पाकिस्तान सरकार द्वारा बलूचिस्तान में किए जा रहे अत्याचारों पर गहरी चिंता दर्शाई है

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

देशसेवा में पीएम मोदी बिजी, क्यों पूछते हो उनकी डिग्री

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, हमारे देश में लोगों को किसी की व्यक्तिगत जिंदगी में ताक-झांक करने और व्यर्थ की पूछताछ करने की बुरी आदत है. दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) का आदेश रद्द करते हुए कह दिया कि प्रधानमंत्री मोदी की डिग्री दिखाना जरूरी नहीं है. इसी तरह स्मृति ईरानी की शैक्षणिक योग्यता से संबंधित जानकारी देने का सीईसी का आदेश भी रद्द कर दिया गया. अदालत ने कहा कि आरटीआई कानून बनाने का उद्देश्य पारदर्शिता को बढ़ावा देना था. यह कानून सनसनी फैलाने के लिए चारा डालने वाला नहीं है. किसी व्यक्ति का शैक्षणिक रिकार्ड उसकी व्यक्तिगत सूचना के तहत आता है. इस खबर से हमें वह फिल्मी गीत याद आया- परदे में रहने दो, परदा ना हटाओ, परदा जो हट गया, भेद खुल जाएगा !% लोग व्यर्थ ही गुल खिलाना चाहते हैं जबकि कुछ चीजें गुलदस्ते में ही अच्छी रहती हैं.

हमने कहा, जब सरकार ने सूचना का अधिकार दिया है तो लोगों की उत्कंठा बढ़ गई है. वह सब कुछ जानना चाहते हैं. जहां श्रद्धा भावना की कमी है वहीं संदेह उत्पन्न होता है. कौन कितना पढ़ा-लिखा है, यह उसका निजी मामला है. देश में बेरोजगारी इतनी है कि चपरासी के पद के लिए भी पोस्ट ग्रेजुएट आवेदन करते हैं. पीएचडी करने के बाद भी शिक्षण सेवक की नौकरी मुश्किल से मिलती है. डिग्री सिर्फ कागज का टुकड़ा बनकर रह गई है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल सभी बैरिस्टर थे. डॉ. राममनोहर लोहिया ने बर्लिन यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की पदवी ली थी. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के पास इंग्लैंड और अमेरिका की ऊंची-ऊंची डिग्रियां थीं. डॉ. शंकरदयाल शर्मा, कैलाशनाथ काटजू और डॉ. श्रीकांत जिचकार की डिग्रियां गिनते-गिनते लोग थक जाते थे. उन लोगों ने कभी अपनी डिग्री नहीं छुपाई.

हमने कहा, व्यर्थ की दलीलें मत दीजिए. अलौकिक व्यक्तित्व वाले और खुद को नॉनबायोलॉजिक मानने वाले की डिग्री पूछना बहुत बड़ी गुस्ताखी है. किताबी शिक्षा या पढ़ने-लिखने से कुछ नहीं होता. संत कबीर ने कहा था- पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, भया ना पंडित कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12005 - डॉ. सागर खादीवाला

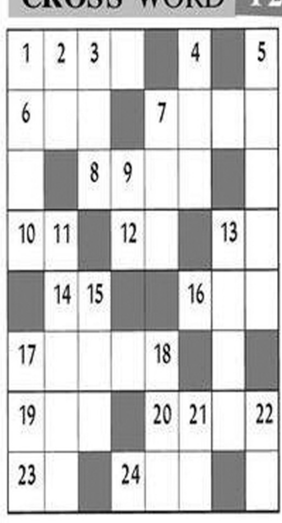

बाएं से दाएं
1.मांस न खाने वाला, मांस रहित (सं.) 6. ठंड से गलने की क्रिया, पिघलन, झरण 7. एक फल का नाम, जाम. 8. निर्निमेष दृष्टि, स्थिर दृष्टि. 10. एक पेड जिसके सभी अंग कड़वे होते हैं (अं.). 12. बड़ी थाली 13. मौसी (उर्दू) 14. नुकसान, घाटा 16. मनुष्य, आदमी 17. जिसे छापकर प्रचलित न किया गया हो 19. झगड़ा 20. गणेश 23. मलाह, सम्मति 24. टकरा देना, लड़वाना

ऊपर से नीचे
1. निरीक्षण, देखभाल (उर्दू) 2. एक पेड़ या उसका निर्यास, पतला लसदार थूक 3. एक घंटे का साठवां भाग (अं.) 4. घुड़की, दंड देने या हानि पहुंचाने आदि का भय दिखाना 5. नेवले के समान एक जंतु जो जल स्थल दोनों में रहता है 7. स्थिर. अचल, पक्का 9. धार्मिक व्याख्यान, वह जो कहा जाए 11. वह प्रलय जिसमें सृष्टि का नाश होता है 13. कुल, वंश 15. मुसलमानी पद्धति के अनुसार होने वाला विवाह (उर्दू) 17. महंगा, मराठी भाषा में ग्यारह की संख्या 18. बलवान, खूब हष्टपुष्ट 21. गमन करना, प्रस्थान करना 22. अभिनेता, एक जाति

Solution 12004

मु	स	ल	मा	न		भा	वी
म	ज्ञा		त	र	ब	त	र
कि		स	ह	म	त		ता
न	सी	ह	त			धा	
	धा	न		म	ख	म	ल
प्रा		शी	त	ल	ता		त्ती
ची	त	ल		म	ना	ना	
र	ट		शू	ल		ती	क्ष्ण

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी, पद का लाभ प्राप्त होगा, व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी, धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, वर्ष के अन्त में शत्रु कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी, किन्तु निवारण भी होगा, व्यर्थ के वाद विवाद एवं व्यय से बचने का प्रयास करें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ होगा, सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु कष्ट होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मांगलिक कार्यो में खर्च होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को उन्नति के योग हैं, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यश और सम्मान में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये पुरूषार्थ का लाभ होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शरीर से दुबला पतला किन्तु लबे कद का फुर्तीला स्वाभाव का बुद्धिमान और चतुर व्यवहारकुशल परिश्रमी होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. ज्वर निमोनिया आदि से 5 वर्ष की आयु तक तकलीफ उठायेगा. बाद में बालक स्वस्थ्य रहेगा. यात्राप्रिय एवं मनोरंजन का शौकीन होगा.

मेष- आर्थिक समस्या का सरलता से समाधान होगा. पूज्य व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा. मानसिक अस्थिरता रह सकती है. कामकाज पूर्ण होगा.

वृषभ- सामाजिक विवादों से बचने का प्रयास करें. मान सम्मान की प्राप्ति होगी. प्रसन्नता रहेगी. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. यश प्राप्त होने का योग है.

मिथुन- शिक्षा के क्षेत्र में सफलता के योग है. यश मान सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी. लाभ होगा. दूर दराज की यात्रा करते समय सावधानी बांछनीय है.

कर्क- श्रम एवं प्रयास करने पर सफलता मिलेगी. आमोद प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे. निजी दायित्वों का लाभ प्राप्त होगा. सुख, संयम बना रहेगा.

सिंह- परिजनों पड़ोसियों या अन्य किसी से व्यर्थ की सलाह लेना कष्टप्रद रह सकता है. स्वयं के बुद्धि विवेक से काम लें. परिश्रम दौड़धूप होगी.

कन्या- शारीरिक सुख एवं मानसिक दृष्टि से संतोष का अनुभव होगा. यश मान सम्मान प्राप्त होगा. सुख सामान्य एवं अच्छा रहेगा. संयम रखें.

तुला- पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. समय अनुकूल एवं लाभप्रद रहेगा. वाद विवाद को टालें. अच्छे समय का लाभ अवसर के अनुरूप प्राप्त करें.

वृश्चिक- स्वास्थ्य में सुधार होगा. नवीन योजनाओं का विकास होगा. कुछ नये समाचार मिलेंगे. मानसिक प्रसन्नता में वृद्धि होगी. संयम रखें.

धनु- राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी. महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति होगी. मन मुताबिक सफलता मिलेगी. नियमितता बनी रहेगी. संयम रखें.

मकर- आज का दिन शुभ एवं अनुकूल रहेगा. आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी. आमोद प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे. शारीरिक मानसिक शांति और संतोष बना रहेगा.

कुम्भ- अनावश्यक कार्यो पर खर्च होगा. कामकाज में बाधायें आ सकती है. पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक रहेगी. मन में विशेष संतोष रहेगा.

मीन- पराक्रम में वृद्धि होगी. नये कार्यो के प्रति विशेष रूचि रहेगी. किये गये प्रयासों में लाभ प्राप्त होगा. नियमितता बनी रहेगी. सलाहलाभप्रद रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

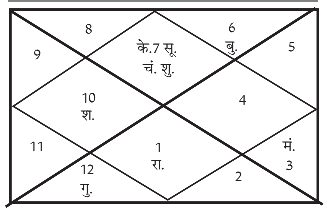

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल पंचमीं गुरूवासरे दिन 3/55, चित्रा नक्षत्रे दिन 8/17, शुक्ल योगे दिन 1/56, बालव करणे सू.उ. 5/41 सू.अ. 6/19, चन्द्रचार तुला, पर्व- ऋषि पंचमीं व्रत, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल पंचमीं को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, शक्कर सरसों, अरंडी, सोयाबीन, पामोलिन आदि तिलहन में तेजी होगी. गेहूँ, जौ चना, अनाज, पर नरमीं रहेगी. नीचे के भाव सम रहेंगे. उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 2698 है.

SUDOKU 7137

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7136

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1